

वरदारु *Tectona grandis* RATNĀK. in NIGH. Pr.
 वरदारुक eine best. Pflanze mit giftigen Blättern SUÇA. 2, 251, 16.
 वरदाश्वम् adj. = वरद 1) BṛĪG. P. 3, 21, 7.
 वरद्रुम m. *Agallochum* H. c. 129.
 वरधमीकिर (4. वर - धर्म + 1. किर) ein ausgezeichnetes Werk an Jmd (acc.) thun: °कृत: R. GORR. 1, 74, 16. statt dessen परो धर्म: कृत: 72, 15 SCHL.
 वरपत्निणी f. N. einer Tantra-Gottheit Verz. d. Oxf. H. 99, b, 18. 20.
 वरपण्डित m. N. pr. eines Autors: श्री° oder पण्डितश्रीवर Verz. d. B. H. No. 566.
 वरपर्णाश्व m. *Lipeocercis serrata* Trin. RATNAM. im ÇKDr.
 वरपाण्ड्य m. N. pr. eines Mannes WILSON, Sel. Works I, 334.
 वरपीतिक Talk RATNĀK. in NIGH. Pr.
 वरपोत = श्रेष्ठशाक SIDDH. in NIGH. Pr.
 वरप्रद 1) adj. = वरद 1). — 2) f. श्री Bein. der Lopāmudrā H. 123.
 वरप्रदान n. 1) = वरदान 1) MBH. 1, 7724. Spr. 2736. VARĀH. BṚH. S. 3, 2. HIT. 116, 10. RAGH. 2 in der Unterschr.
 वरप्रभ 1) adj. (f. श्री) einen ausserordentlichen Glanz habend WEBER, KRṢHṂĀ. 283. — 2) m. N. pr. eines Bodhisattva Lot. de la b. l. 13. fgg.
 वरपाल 1) adj. die schönsten Früchte habend. — 2) m. Kokosnussbaum ÇABDAK. im ÇKDr.
 वरवाल्कीक n. *Saffran* Comm. zu AK. 2, 6, 3, 25. °वाल्कीक gedr.
 वरम् (von 3. und 4. वर) gaṇa स्वरादि zu P. 1, 1, 37. 1) वरं वरम् nach Belieben: तेषां व इन्द्रो क्तु वरं वरम् AV. 6, 67, 2. 11, 9, 20. 10, 21. — 2) vorzugsweise, lieber, besser AK. 3, 4, 25, 175. MED. r. 63. fg. a) in der ältesten Sprache construiert mit einfachem abl. oder abl. mit श्री. पाहि नेम उत योगे वरं नः RV. 7, 84, 3. प्र ते अग्रयो ऽग्निभ्यो वरं निः शोः शुचन्तु besser als die andern 1, 4. सा वंक् योत्तभिर्वतोषो वरं वरुसि तोषमन्तु 6, 64, 5. यदश्चिना वरुस्यः सूरिमा वरम् wenn ihr zu (meinem) Opferherrn vorzugsweise kommt 1, 119, 3. अये सप्तभ्य आ वरं प्रान्धं श्रोणां च तारिषत् besser als sieben (andere gekonnt hätten) 10, 25, 11. कुवित्तिमभ्य आ वरं स्वसरो या इदं ययुः 2, 5, 5. (अभ्यर्ष) देवान्सखिभ्य आ वरम् besser als deine Genossen d. h. wirksamer als die andern Soma, die von Andern gebrauchten Libationen 9, 43, 2. 68, 2. — b) mit praes. und imperat. so v. a. es ist besser —, es ist am besten, dass, es wäre besser, wenn: तस्मादरं सदायं तं शकटालं समुद्धरे KATHĀS. 3, 4. 40. 18, 355. 24, 60. 38, 15. 114, 87. तत्कश्चित्सूपकद्वरम् । नये ऽत्र स्थाप्यताम् 20, 195. 26, 248. KUSUM. 33, 15. mit Ergänzung des verbi finiti: अन्यत्र गतस्यापि मे कस्यचिदुष्टमह्वस्य मोसाशिनः सकाशान्मृत्युर्भविष्यति । तद्वरं सिंहात् (genauer wäre सिंहस्य) darum ist es besser, dass es durch den Löwen geschieht PAÑKĀT. 90, 16. वरमनेन शेषेण प्रियतमा संतोषिता 264, 3. — c) mit potent. so v. a. eher könnte es geschehen, dass: शठस्तु समयं प्राप्य नोपकारं हि मन्यते । वरं तमुपकर्तारं दोषदद्या च दूषयेत् ॥ Spr. 3031. BṛĪG. P. 2, 1, 12. — d) in prädicativer Stellung: यस्ते सखिभ्य आ वरम् der besser als deine Genossen ist RV. 1, 4, 4. प्रतीचीं दिशामियमिन्द्रम् AV. 12, 3, 9. ÇĀT. Br. 3, 9, 2, 16. शिष्यैः शतक्रतान्दोमानिकः पुत्रक्रतो वरम् (acc. st. abl.) SHADY. Br. 4, 1. अज्ञातमृतमूर्खेभ्यो मृताज्ञाता मुतो वरम् Spr. 35. वरमेकः (पुत्रः) कुलालम्बो 746. 1297. 1316. 2180. नरा न तमवेतसे तेनात्र वरमङ्गनाः VARĀH. BṚH. S. 74, 12. BṚH. 7, 13. KATHĀS.

43, 89. वरं कूपशताद्वापी वरं वापीशतात्क्रतुः Spr. 2733. 2735. BṚĪG. P. 5, 19, 23. प्रुक्स्य u. s. w. तरोरिव दरिद्रस्य न वरं जन्मिनः फलम् der Nutzen ist nicht grösser als der eines verdorrten Baumes Spr. 3006. — e) वरम् — न (न च, न तु, न पुनः, तदपि न, तथापि न) α) eher —, lieber als: या प्राणान्वरमर्पयति न पुनः संपूर्णदृष्टिं प्रिये ŚĪA. D. 54, 22. वरं मत्कृत्या भ्रियते पिपासया तथापि नान्यस्य करोत्युपासनाम् ॥ Spr. 1694. वरमाशीविषैः सङ्गं कुर्यान्न त्वेव दुर्जनैः 1618. अहिना वरमदं दृश्यो न तच्चनुषा 342. नहि — वरम् nicht — vielmehr SĀHĪKṚTĀRĪTHOP. 38, 12. — β) besser (prädicativ) als: सावित्रीमात्रसरो ऽपि वरं विप्रः सुपन्नितः । नार्थन्नितस्त्रिवेदो ऽपि सर्वाशी सर्वविक्रयो ॥ M. 2, 118. वरं व्यायच्छतो मृत्युर्न गृहीतस्य बन्धनम् (so ist zu lesen) MĀKĪH. 102, 7. MBH. 6. Spr. 2726. fgg. 2738. 2746. 2748. 3101. 4196. 4968. fg. 4971. KATHĀS. 19, 22. 35, 36. PAÑKĀT. 172, 25. वरम् — न च Spr. 2734. 2737. 2739. 2744. 2750. 4970. वरम् — न तु 2732. 2741. fg. 2745. 2747. 3768. वरम् — न पुनः 2730. 2740. PAÑKĀT. 138, 19. वरम् — तदपि न Spr. 2731. उचितः प्रणयो वरं विकृतम् — उपचारविधिर्मनस्विनीनां न तु पूर्वाभ्यधिको ऽपि भावप्रून्यः MĀLAV. 38. परमेकस्य सत्त्वस्य प्रदातुं जीवितं वरम् । न च विप्रसकृन्नेभ्यो गोसकृन्ने दिने दिने ॥ Spr. 1704. वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतैरपि (instr. statt nom.) 2743. वरम् im Nachsatz wiederholt: वरं यद्धर्मपाशेन त्पामेकं हि जीवितम् । वरं न यद्धर्मेण कल्पकोऽतिशान्त्यपि ॥ Spr. 2725. वरं प्रून्या शाला न च खलु वरं (so ist wohl zu lesen) दुष्टवृषभः 2730.
 वरमुखी f. ein best. Parfum, = रेणुका ÇABDAK. im ÇKDr.
 वरयु s. u. dem caus. von 2. वर.
 वरयात्रा f. die feierliche Procession eines Werbers, — Bräutigams H. c. 107.
 वरयितर (von वरयु) nom. ag. Werber, Bräutigam, Geliebter, Gatte H. 317. HALĀI. 2, 342.
 वरयितव्य (wie eben) adj. zu wählen NĪA. 1, 7. MBH. 1, 4134. 4369.
 वरयु m. N. pr. eines Mannes MBH. 3, 2731.
 वरयुवति und °ती f. 1) eine schöne Jungfrau. — 2) ein best. Metrum: 4 Mal ————— COLLEBR. Misc. Ess. II, 162 (XI, 12). Ind. St. 8, 421.
 वरयोग्य adj. einer Wunschgabe würdig MĀRK. P. 16, 88.
 वरयोनिक = केसर NIGH. Pr.
 वररुचि m. N. pr. eines Dichters, Mediciners, Grammatikers und Lexicographen, der hier und da mit KĀtjājana identificirt und unter den neun Perlen am Hofe des VikramĀditja aufgeführt wird, TRĪK. 2, 7, 25. H. 852. HAB. Anth. S. 1. MED. Anh. 1. KATHĀS. 1, 64. 2, 70. 9, 2. PAÑKĀT. 223, 4. fgg. COLLEBR. Misc. Ess. II, 45. 53. WEBER, Ind. Str. 2, 53. fgg. HALL in der Einl. zu VĀSAVAD. 7. 20. Verz. d. B. H. No. 939. Verz. d. Oxf. H. 124, b, 18. 27. fg. 150, b, No. 320. 154, a, 84. 156, b, No. 332. 167, a, No. 371. 178, b, No. 405. 182, b, 3 v. u. 185, a, No. 421. GILD. Bibl. 384. WASSILJEV 47. 49. 74. Ind. St. 4, 346. UGÉVAL zu UṆĀDIS. 1, 11. 37. °लिङ्कारिका 2, 109. unter den Bein. Çiva's Çiv.
 वररूप 1) adj. eine schöne Gestalt habend. — 2) m. N. pr. eines Buddha LALIT. ed. Calc. 3, 13.
 वरल 1) m. eine Art Bremse ÇABDAM. im ÇKDr. — 2) f. श्री a) dass. H. a. n. 3, 674. MED. I. 118. — b) das Weibchen der Gans H. 1327. H.